विषय–सूची

राष्ट्रीय *पृष्ठ संख्या*

1. मेरा भारत महान : उसका वांछित रूप 1
2. राष्ट्र के लिए जीना सीखो 3
16. भारत : वर्तमान और भविष्य 45
19. भारत की राष्ट्रीय एकता 54
31. मेरे सपनो का भारत 88
49. भारत में साम्प्रदायिक एकता और सौमनस्य की आवश्यकता 151
54. इक्कीसवीं सदी में भारत 169
57. पर्यटन : राष्ट्रीय एकता का सूत्र 180

सामाजिक

12. समाज में बढ़ती हुई अनुशासनहीनता 33
14. जीवन जीने की कला 39
17. पीढ़ियों का अन्तर 48
23. दैनिक जीवन में साहसिकता 66
26. 'जैसा बोओगे, वैसा काटोगे' 75
32. शरीर ही सब धर्मों का साधन है 91
33. मदिरापान : एक सामाजिक कलंक 93
34. युवाशक्ति : और समाज निर्माण के संदर्भ में उसकी सकारात्मक भूमिका 96
51. सार्वजनिक जीवन में भ्रष्टाचार 159
52. वह व्यक्ति जिसका मैं सर्वाधिक प्रशंसक हूँ 163
53. यदि चरित्र नष्ट हो गया तो सब कुछ नष्ट हो गया 166
58. देर हो अंधेर नहीं 183

राजनीतिक

22. लोकतंत्र में विपक्ष की भूमिका 63
29. एक आदर्श नेता की मेरी कल्पना 83
30. भारतीय जनतंत्र में प्रेस की शक्ति 86
38. क्या एक विकासशील देश के लिए जनतंत्र सर्वश्रेष्ठ शासन प्रणाली है 108
39. पड़ोसी देशों के साथ भारत के संबंध 111
43. प्रजातांत्रिक राज्य में पुलिस की भूमिका 128
44. पुलिस व्यवस्था में सुधार की आवश्यकता 132
45. क्षेत्रीय आकांक्षायें–राष्ट्रीय एकता के संदर्भ में 135
46. भारत में संसदीय जनतंत्र और उसका भविष्य 139
47. नैतिकता और राजनीति 143
48. भारत में प्रजातंत्र की सफलता 147
50. प्रेस की स्वतंत्रता 155
56. छात्र चुनाव और राजनीतिक दल 177
64. विश्व शांति में भारत की भूमिका 202

साहित्यिक

3. साहित्य का उद्देश्य 6
4. साहित्यकार का समाजिक जीवन में योगदान 9
5. जीवन और साहित्य 12
6. राष्ट्रोत्थान में साहित्य की उपयोगिता 15

शैक्षिक

8. सबके लिए शिक्षा 21
9. शिक्षा का उद्देश्य 24
10. शिक्षा और आजीविका 27
41. नई शिक्षा नीति 120
42. भारत में उच्च शिक्षा के माध्यम के रूप में प्रादेशिक भाषाएं 124

वैज्ञानिक

15. चलचित्रों का प्रभाव 42
18. दूरदर्शन : एक अभिशाप या वरदान 51
36. तकनीकी प्रगति और पर्यावरण में प्रदूषण 102
37. विज्ञान और समाज 105

आर्थिक

59. ग्राम सुधार की हमारी कल्पना 185
60. शहरी आबादी को रोकने के उपाय 188
61. जीवन स्तर ऊँचा करने की हमारी भारतीय कल्पना 191

नारी-जगत

11. कामकाजी महिलाओं की समस्याएं 30
21. क्या नारी को अब भी घरेलू दायित्वों तक सीमित रहना चाहिये 60
25. दहेज प्रथा : अतीत और वर्तमान 72
40. भारतीय जीवन में नारी का स्थान 116

सांस्कृतिक

27. हमारी सांस्कृतिक विरासत 78
35. महजब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना 99

यात्रा

7. यात्रा ! शिक्षा का एक ढंग 18
55. स्मृतियों में बसी एक यात्रा 172

सेवा-समर्पण

13. सेवा का मार्ग अपनाना सर्वोत्तम ईश्वर भक्ति है। 36
20. सारा विश्व मेरा देश है और भलाई करना मेरा धर्म 57
28. बलवान को निर्बल की सहायता करनी चाहिए 81
62. हिंदुत्ववादी जीवन दर्शन के पुरोधाः डा. केशव बलिराम हेडगेवार 194
63. संस्कार भारती 'सत्यम शिवम् सुंदरम' एवं
कलात्मक चेतना का जीवंत–प्रतीक संगठन 197
64. राष्ट्र सेविका समिति
प्रतिभा, क्षमता और शक्ति का संगम 199
65. दीनदयाल शोध संस्थान : ग्रामोदय एवं ग्राम स्वावलंबन का स्तंभ 205

1

मेरा भारत महान : उसका वांछित रूप

प्रत्येक देशभक्त नागरिक अपने राष्ट्र के संबंध में अपने मन एवं मस्तिष्क में कुछ सपने संजोता है और उन्हें साकार करने के लिए प्रयत्न करता है। उसका यह प्रयत्न कभी व्यक्तिगत स्तर पर होता है तो कभी सामाजिक स्तर पर। कभी वह अकेले ही अपने लक्ष्य पथ पर बढ़ता है तो कभी संगठित समाज के रूप में। सत्य तो यह है कि बिना कल्पना या स्वप्न के राष्ट्र की व्यवहारिक प्रगति हो ही नहीं सकती। पहले लक्ष्य मन में जगता है और फिर थिरकता है कदमों से। प्रगति के चरण बढ़ते हैं मन की उछालों के आधार पर, उमंगों के आधार पर।

भारत मेरी मातृभूमि है, पितृभूमि है और पुण्यभूमि है। यह मेरी आराधना एवं श्रद्धा का प्रतीक है। यह मेरी जिंदगी के सभी श्रेष्ठ जीवन मूल्यों का प्रेरक है और मेरी दृष्टि में संपूर्ण मानवता का रक्षक और मानवीय संवेदनशीलता का अग्रदूत है। यह अत्यंत प्राचीन राष्ट्र के नाते भी अपनी जीवंतता का संकेत प्रदान करता है। ऐसा भारत, जैसा हम सब जानते हैं, भविष्य में क्या भूमिका निभाए, अपने को संपूर्ण मानवता के लिए किस प्रकार नियोजित करे तथा अन्य सभी राष्ट्रों के लिए मार्गदर्शक एवं प्रेरक कैसे बन सके, ये सब प्रश्न सभी देशभक्तों के अंतः करणों में उठते रहते हैं। ये सब प्रश्न इसलिए उमड़ते एवं घुमड़ते हैं, क्योंकि व्यक्ति अपने जीवन के सौख्य के लिए सपनों का ताना बाना बुनता है। मैं अपने देश भारत के प्रति अत्यधिक रागात्मक भाव रखने के कारण अपने सपनों में उसके लिए जैसा भविष्य चाहूँगा, वह निम्न प्रकार का होगा।

(1) सशक्त एवं प्रभावशाली भारत

मेरे सपनों का भारत विश्व की अन्यतम शक्तियों में से एक होगा। उसका प्रत्येक नागरिक भाषा, प्रांत, पंथ, जाति उपजाति के भेदों से ऊपर उठकर राष्ट्र की एकीकृत इकाई के रूप में अपनी भूमिका अदा करेगा और अपनी वैश्विक भूमिका निभाएगा। उसे दुनिया की कोई भी शक्ति अपने किसी प्रकार के आयुध से भयाक्रांत नहीं कर सकेगी, क्योंकि उसका संगठित समाज अभेद्यता के आधार पर सब प्रकार की चुनौतियों को स्वीकार करेगा। उसकी शक्ति रचनात्मक, मानव कल्याणकारी होगी न कि विध्वंसकारी। उसका मानव के भौतिक एवं आध्यात्मिक अभ्युत्थान के लिए प्रयत्न तथा साध्यता का व्यवहारिक रूप उसकी वैश्विक योजना का परिचायक होगा।